अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	जीवन मूल्य	पृष्ठ संख्या
1	स्वदेश-प्रेम (कविता)	देशभक्ति, भाईचारा, संगठन	3
❀	समाज के लिए		7
2	प्रतिबिंब (नाटक)	मधुर भाषण, आदरभाव, कृतज्ञता	8
3	धर्मात्मा शिवि (कहानी)	शरणागत रक्षा, दयाभाव, त्याग	16
4	भूल गया है क्यों इंसान (कविता)	एकता, देशप्रेम, विश्व-बंधुत्व	23
❀	डाकिए (कविता)		26
5	गिल्लू (कहानी)	वात्सल्य, सेवाभाव, सकारात्मक सोच	27
6	अनमोल उपहार (प्रेरक कथा)	सादगी, स्वाभिमान, निश्छल प्रेम	34
❀	प्रतीक्षा (प्रेरक प्रसंग)		40
7	प्यारी सदाको (आलेख)	युद्ध के दुष्परिणाम, मित्रता	41
❀	सूर्योदय की नगरी जापान (लेख)		47
8	चतुर चित्रकार (कविता)	चतुराई, सतर्कता, निर्णय-बुद्धि	48
9	रक्षा में हत्या (कहानी)	दयालुता, संवेदनशीलता, जिज्ञासुभाव	53
10	जो देखकर भी नहीं देखते (लेख)	संवेदनशीलता, आत्मविश्वास	60
❀	आदर्श प्रश्न-पत्र 1		66
11	बालक चंद्रगुप्त (प्रसंग)	धैर्य, सहनशीलता, ध्येयनिष्ठा	69
❀	आचार्य चाणक्य		75
12	एक बूँद (कविता)	जिज्ञासुभावना, त्याग, विश्वास	76
13	महान विभूति - मदर टेरेसा (जीवनी)	मानव-प्रेम, निःस्वार्थ सेवाभाव	81
❀	स्वर्ग से बढ़कर सेवा		87
14	दोहा-दशक (दोहे)	मधुर वाणी, दया, क्षमा, परिश्रम	88
15	कीमती कागज़ (चित्रकथा)	दूरदर्शिता, वैज्ञानिक चेतना	93
16	अभागा तोता (कहानी)	स्वच्छंदता, कष्ट-सहिष्णुता	100
❀	आज़ादी		106
17	जॉन लॉगी बेयर्ड (जीवनी)	आविष्कारक वृत्ति, संघर्ष, लगन	107
18	एक मुलाकात - बच्चन जी के साथ (वार्ता)	कला-प्रेम, जिज्ञासुभावना, सादगी	112
19	लद्दाख की सैर (यात्रा-वर्णन)	सौंदर्य अनुभूति, राष्ट्रीय एकता	118
20	माँ, कह एक कहानी (कविता)	रक्षा-भाव, न्याय का आग्रह	125
❀	श्रेष्ठ कौन?		131
❀	आदर्श प्रश्न-पत्र 2		133

पाठ-1

स्वदेश-प्रेम

कविता

हमारा देश भारत है व हम इसके वासी हैं। केवल धरा का टुकड़ा ही देश नहीं कहलाता, अपितु देश का वास्तविक स्वरूप इसके निवासियों से है। प्रत्येक निवासी का अपने देश व समाज से अटूट संबंध होता है तथा समाज के प्रति कर्तव्य भी होता है, जिसका पालन करना प्रत्येक देशवासी के लिए अनिवार्य है।

सेवा में तेरी भारत तन-मन लगाएँगे हम,
फिर स्वर्ग का सहोदर तुझको बनाएँगे हम।
तुझसे ही जने औ तूने ही पालन किया हमारा,
उपकार कितने करता क्या-क्या गिनाएँगे हम।
तेरे ऋणों का बोझा सर पर धरा हमारे,
करके प्रयत्न पूरा उसको चुकाएँगे हम।
तेरे लिए जिएँगे, तेरे लिए मरेंगे,
तेरी ही सेवा में यह जीवन बिताएँगे हम।
तू स्वर्ग है हमारा, तू सौख्य गृह हमारा,
तुझसे ही नेह नाता अब तो लगाएँगे हम।
प्यारे सुवन तिहारे फूट और मद के मारे,
बेहोश जो पड़े हैं उनको जगाएँगे हम।
परमेश! अब हमें तू पूरन पुनीत बल दो,
बिना आपके सहारे कुछ कर न पाएँगे हम।

– माखनलाल चतुर्वेदी

अपनी मातृभूमि से प्रेम करो, देशभक्त बनो।

शिक्षण-संकेत : कविता का सस्वर वाचन कराएँ। कविता का भाव स्पष्ट करते हुए छात्रों के मन में देशभक्ति की भावना जागृत करें।

केवल पढ़ने के लिए

आज़ादी

आज़ादी का मूल्य प्रत्येक सुख से बढ़कर है। केवल मानव ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी भी स्वच्छंद जीवन जीना चाहते हैं। 'आज़ादी में सुख है, गुलामी में नहीं' इस संदेश को देने वाली यह कविता पढ़िए।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के,
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे।
कनक तीलियों से टकराकर,
पुलकित पंख टूट जाएँगे।।

हम बहता जल पीने वाले,
मर जाएँगे भूखे-प्यासे।
कहीं भली है कटुक निबौरी,
कनक-कटोरी की मैदा से।।

नीड़ न दो चाहे टहनी का,
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो।
लेकिन पंख दिए हैं तो,
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।।